International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 140-143

भूमंडलीकरण और नारी विमर्श

डॉ. अपर्णा शर्मा*

सार

भूमंडलीकरण 20वी शताब्दी की महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि इसके अन्तर्गत विभिन्न विषयो के साथ नारी विमर्श के ज्वलत मुद्रदे को भी उठाया गया है नारीवाद या स्त्री विमर्श केवल एक सरहद तक नही वरन् वैश्विक स्तर पर नारी चेतना नारी स्वातंत्य का आएवान करना है। व्तमान समय में यघपि स्त्री पारिवारिक पितृसन्तात्मक से बाहर तो आई है वही इससे उसके अस्तित्व का भी हनन हुआ है! पश्चिमी देशों में भी स्त्री मुधित के कई आदोलन हुए है वैसे भूमंडलीकरण मीडिया पूंजीवाद एंव वाजीकरण ने स्त्री को स्वालंबी बनाया तो वही उसके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह यथावत है नारी को पुरूषो के समान सभी संवैधानिक व्यक्तिगत एंव सामाजिक अधिकार प्राप्त है लेकिन फिर कहीं न कही उसके जीवन पर उसका अधिकार नही है यह आजादी अधूरी आजादी लगती है स्त्री की सामाजिक स्थिति एंव उनके मानव अधिकारों के हनन सक केनिद्रत करने हुय कहा भी गया है कि यह सब जगह है फिर भी कहीं नही उसके बिना ना सृष्टि चलनी है ना समाज न घर ना परिवार दुनिया भर में वह सदैव हासिए पर धकेली गई है भूमंडलीकरण के दौर में स्त्री के साथ साथ समलैगिकता एकल अभिधावक अविवाहित महिला आदि मुद्रदो पर भी विचार हो रहा है वैश्विक स्तर पर महिलाओं की समस्या का समाधान प्रस्तुत किया है जो स्थानीय रूप में केवल स्त्रिर्या ही समझ सकती है क्योकि वे समस्या की स्वय भोग्या है जहां तक मूल्य नर और नही दोनो के लिए अमुल्य है लेकिन पुरूष नर और नारी दोनो के लिए अमूल्य है लेकिन पुरूष प्रधान समाज में सारे प्रतिबध नारी के लिए ही है पुरूष हर मामले मे स्वतंत्र है आज नारी का सबसे बडा शत्रु उसका ही डर है वास्तव में समाज की रूढिगत मान्यताएं स्वयं नही बदलती उन्हे बदलने के लिए संघर्ष करना पडता है और यदि हम इतिहास देखे तो यही हुआ है कि एक स्त्री को अपनी बुधी एंव साहस को हमेशा साथ रखना चाहिए जिससे वह स्त्री अस्मिता के तमाम बंधनो से मुक्ति प्राप्त कर सके। विश्व के सर्वोन्तम शिखर पर पहुंच जाने के बाद भी नारी का भारतीय समाज में निम्न स्थान पर बने रहना एक चित्नन का विषय है भुमंडलीकरण मे स्त्री का सशक्तिकरण और विकास तो संभव हूआ है लेकिन आवश्यकता इस बात की पुरूष भी अपनी मानसिकता को बदलने वैश्वीकरण की प्रकिया के अनर्गत महिलाओं के अनूकुल रोजगार का भी निर्माण किया जा रहा है शिक्षा का प्रचार प्रसार किया जा रहा है आप महिलाएं स्वंय को ज्यादा स्वंतंत्र और आत्मनिर्भर अनुभव कर रही है फिर भी एक लम्बी परंपरा की श्रृंखला को खोलने के लिए उन्हें अपने हौसलों के साथ आगे बढ़ना होगा। तभी वह विकास की प्रक्रिया में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिला के आगे बढ़ेगी। इस प्रकार संक्षेप में कहे तो वैश्वीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है किन्तु अपेक्षित सुधार अभी भी बाकी है।

शब्दकोशः *भूमंडलीकरण, नारी विमर्श, वैश्वीकरण की प्रकिया, रूढिगत मान्यताएं, आत्मनिर्भर अनुभव।*

प्रस्तावना

भूमंडलीकरण बीसवीं शताब्दी की महत्वपूर्ण घटना है इसके अंतर्गत विभिन्न विषयों के साथ नारी विमर्श के ज्वलंत मुद्दे को भी उठाया गया है नारीवाद या स्त्री विमर्श एक सरहद तक नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर नारी चेतना नारी स्वतंत्र का आव्हान करता है।

* सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, एस. एस. जैन सुबोध पी. जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

आज युग बदल गया वैश्वीकरण और बाजारवाद के चलते जीवन और परिस्थितियां बदल गई हैं रहन–सहन के तरीके बदल गए हैं लेकिन यह प्रश्न वही का वही है एक स्त्री की दुनिया कितनी बदली है। महिला उत्पीड़न के जितने भी मामले सामने आते हैं उनके मूल में निरक्षरता रूढ़िवाद और अंधविश्वास जैसे का तैसा है वैश्वीकरण के कारण संचार क्रांति आई जिससे यह ज्ञात होता है कि अभी भी 27 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में शिशु लिंग अनुपात में लगातार गिरावट आ रही है अब हरियाणा पंजाब राजस्थान मध्य प्रदेश सब बेटी बचाओ का नारा दे रहे हैं हमारी परंपरागत रूढ़ियों ने स्त्री का ऐसा सामाजिकरण किया है की अधीनता परतंत्रता को वह खुद गहरे तक आत्मसात कर बैठी है। स्वास्थ्य शिक्षा राजनीतिक स्वतंत्रता आर्थिक स्वतंत्रता यहां तक की स्वयं के अस्तित्व बोध स्वयं की अस्मिता जैसे मौलिक अधिकारों से वंचित है।

आधुनिक से हो रहे उत्तर आधुनिक समाज में स्त्री के लिए हर रोज एक नई समस्या नए रूप में सामने आ रही है। बाजार हमेशा पूंजीपति वर्ग के पास रहा है और पूंजीपति हमेशा से पुरुष वर्ग के पास रहा है और पूंजीपति हमेशा से पुरुष वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है आधुनिक काल में स्त्री का संघर्ष और अधिक बढ़ा है उत्तर आधुनिकता बाजारवाद और मीडिया से मिलकर ब्यूटी का एक ऐसा प्रेम तैयार किया है की स्त्री उस बाजार में सिमट गई है मॉडल और अभिनेत्रियों के रूप में महंगी चीजों का प्रयोग करने वाली स्त्री दोहरी मार का शिकार हो गई है इस दौर में नारी का जीवन और अधिक कष्ट में और द्वंदात्मक हो चुका है यह भी शोषण का दूसरा रूप है।

मन समय में यद्यपि स्त्री पारिवारिक पितृसत्तात्मक से बाहर तो आई है वही इससे उसके अस्तित्व का भी हनन हुआ है पश्चिमी देशों में इससे मुक्ति के कई आंदोलन हुए वैसे भूमंडलीकरण मीडिया पूंजीवाद एवं बाजारीकरण ने स्त्री को स्वावलंबी बनाया तो वही उसने अपने फायदे के लिए एक उपभोग की वस्तु भी बनाया इन सभी के बीच उसके अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह यथावत है। नारी को पुरुषों के समान सभी संवैधानिक व्यक्तिगत एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त है लेकिन फिर कहीं ना कहीं उसके जीवन पर उसका अधिकार नहीं है यह आजादी अधूरी आजादी लगती है।

नारी विमर्श यह शब्द पश्चिम के फेमिनिज्म का ही हिंदी पर्याय है परंतु पश्चिम और पूर्व में नारी को लेकर भिन्न दृष्टि है वहां नारी किसी परंपरा को नहीं तोड़ रही बल्कि वर्तमान से ही विद्रोह कर रही है भारत में हजारों वर्ष की रूढ़ियों परंपरा और प्रचलन को तोड़ नया कुछ करने की बात करती है मानव वह नारी अपनी अस्मिता का बोध लेकर मुक्ति की तरफ बढ़ रही है लेकिन इसमें भी 2 वर्ग बन गए हैं एक शहरी क्षेत्र की नारी और एक गांव की स्त्री जो कि भूमंडलीकरण से प्रभावित नहीं है उसे केवल रोटी कपड़ा और मकान तीन चीजें ही चाहिए।

स्त्री की सामाजिक स्थिति एवं उसके मानव अधिकारों के हनन को केंद्रित करते हुए कहा भी गया है कि वह सब जगह है फिर भी कहीं नहीं उसके बिना ना सृष्टि चलती है ना समाज ना घर ना परिवार दुनिया भर में वह सदैव हाशिए पर धकेली गई है भूमंडलीकरण के दौर में स्त्री के साथ–साथ समलैंगिकता एकल अभिभावक अविवाहित महिला आदि मुद्दों पर भी विचार हो रहा है वैश्विक स्तर पर महिलाओं की समस्या का समाधान प्रस्तुत किया गया है जो स्थानीय स्तर पर ज्यादा संभव है स्त्री विमर्श को सही रूप से केवल स्त्रियां ही समझ सकती हैं क्योंकि वह समस्या की स्वयं भौगया है जहां तक चरित्र का प्रश्न आता है तो चरित्र नैतिक मूल्य नर और नारी दोनों के लिए अमूल्य है लेकिन पुरुष प्रधान समाज में सारे प्रतिबंध नारी के लिए ही है पुरुष हर मामले में स्वतंत्र है आज नारी का सबसे बड़ा शत्रु उसका ही डर है वास्तव में समाज की रुढिगत मान्यताएं स्वयं नहीं बदलती उन्हें बदलने के लिए संघर्ष करना पड़ता है और यदि हम इतिहास देखें तो यही हुआ है कि एक स्त्री को अपनी बुद्धि और साहस को हमेशा साथ रखना चाहिए जिससे वह स्त्री अस्मिता के तमाम बंधनों से मुक्ति प्राप्त कर सके।

नारी विमर्श यह शब्द भी पश्चिम से आया है परंतु पश्चिम और पूर्व में नारी को लेकर भिन्न दृष्टि है वहां नारी किसी परंपरा को नहीं तोड़ रही वर्तमान से विद्रोह कर रही है भारत में हजारों वर्ष की रूढ़ियों परंपरा और प्रचलन को तोड़ नया कुछ करने की बात करती है मानो वह नारी अपनी अस्मिता का बोध लेकर अपनी

मुक्ति की तरफ बढ़ रही है आज उसमें यह बोध जाग उठा है कि वह स्वयं भी पुरुष के समकक्ष एक इकाई है अतः किसी रूप में गुलाम या अधिनस्थ नहीं है। पुरुष उस पर वर्चस्व ना जमाए वह चाहती है की सभ्यता का अर्थ मनुष्य पशु प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त करें स्त्री पुरुष के बीच कोई पाशविक संपर्क नहीं रहना चाहिए वह दोनों साथी ही बन कर रहे यही मूल भावना है।

विश्व के सर्वोत्तम शिखर पर पहुंच जाने के बाद भी नारी का भारतीय समाज में निम्न स्थान पर बने रहना एक चिंतन का विषय है भूमंडलीकरण में स्त्री का सशक्तिकरण और विकास तो संभव हुआ है लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि पुरुष भी अपनी मानसिकता को बदलें वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत महिलाओं के अनुकूल रोजगार का भी निर्माण किया जा रहा है शिक्षा का प्रचार प्रसार किया जा रहा है आज महिलाएं स्वयं को ज्यादा स्वतंत्र और आत्मनिर्भर अनुभव कर रही है फिर भी एक लंबी परंपरा की संख्या को खोलने के लिए उन्हें अपने हौसलों के साथ आगे बढ़ना होगा।

स्त्री विमर्श सदियों से चले आ रहे मौन को अभिव्यक्ति देता है तथाकथित नैतिक मूल्यों पैतृक व्यवस्थाओं को विभिन्न करता है जो स्त्री की चेतना को अनुकूलित करते हैं स्त्री विमर्श महिलाओं के अधिकारों को मजबूत बनाता है शिक्षा के द्वारा महिलाओं में जो आत्मविश्वास आया है उससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है स्वतंत्र रूप से अपनी जीविका उपार्जित कर रही हैं अन्य महिलाओं के लिए भी आकर्षण का केंद्र हैं आज उनमें आत्मविश्वास कार्य क्षमता और मानसिक स्तर पर जो भी बदलाव आए हैं उनको मिली आर्थिक स्वतंत्रता का ही परिणाम है।

भूमंडलीकरण के कारण महिलाओं की स्थिति में कुछ सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं नौकरियों के आग्रह के कारण एक तो उनका विवाह सही समय से होता है फिर जो जागरूकता की मुहिम चली है इससे महिलाओं को अपने भविष्य के सही गलत का निर्णय भी हो गया है और वह जान गई हैं कि शिक्षा के द्वारा ही वह आगे बढ़ सकती है और जो अभी शिक्षित नहीं है वह छोटे–छोटे लघु उद्योगों के जरिए आर्थिक रूप से सक्षम है।

संवैधानिक एवं सामाजिक अधिकारों के कारण महिलाएं आगे बढ़ी हैं जो एक अच्छा संकेत है भारतीय संविधान की प्रस्तावना में ही घोषित किया गया है की अवसर की समानता सभी को प्राप्त है राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं को उचित प्रतिनिधित्व देने के लिए संविधान के 73वें 74 में संशोधन द्वारा देश भर की पंचायतों एवं जिला परिषदों को 33ः स्थान आरक्षित करने का प्रावधान है लेकिन फिर भी यह दुखद है कि आज भी नारी उत्पीड़न की घटनाएं द्रोपदी के चीर की तरह बढ़ती जा रही है भारत में आईपीएस के अंतर्गत प्रतिवर्ष महिलाओं के साथ आपराधिक मामले लगभग 6 प्रति वर्ष महिलाओं के प्रति होते हैं इन सबके बाद भी एक आशा की किरण यही है कि देश की विकसित अर्थव्यवस्था 9ः विकास दर ने महिलाओं के समक्ष संभावनाओं के नए असीमित क्षेत्र खोल दिए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की महिला वैश्विक रोजगार रिपोर्ट के अनुसार समान काम के लिए अभी भी पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कम वेतन मिलता है वर्ल्ड इकोनामिक फोरम की रैंकिंग के अनुसार महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में भारत का स्थान 115 नंबर पर है संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग के वार्षिक आर्थिक सर्वेक्षण 2007 के अनुसार यदि भारत में महिलाओं की भागीदारी अमेरिका के बराबर हो जाए तो देश का सकल घरेलू उत्पाद 4.2 प्रतिशत की दर से बढ़ेगा और वृद्धि दर 1.0 8ः बढ़ जाएगी जिससे अर्थव्यवस्था को 19 अरब डॉलर का लाभ होगा लेकिन शिक्षा में लड़के लड़की के अंतर की वजह से 16 से 18 अरब डॉलर का आर्थिक नुकसान हो रहा है।

संक्षेप में कहें तो वैश्वीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है किंतु अपेक्षित सुधार अभी बाकी है 21वीं शताब्दी महिला शताब्दी है अनेक ख्याति प्राप्त महिलाएं हमारे आसपास हैं जो अपनी पहचान द्वारा यह स्थापित करती हैं की भूमंडलीकरण के कारण महिलाओं के जीवन में बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा है जो एक साधारण महिला को भी आसमा की ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्त्री विमर्श का स्वरुप– भावना वाली मासी – अपर्णा भाटी (राजकमल प्रकाशन)
2. महादेवी वर्मा– श्रृंखला की कड़ियाँ – पृष्ठ– १०५, लोक भारती प्रकाशन
3. विवेकानंद तुम लोट आओ – पृष्ठ २५६, प्रतिभा प्रकाशन
4. आधी दुनिया : विवेकानंद का स्त्री बोध वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य अजय कुमार साव (हार्दिक प्रकाशन)
5. नारी के प्रति अत्याचार एवं मानवाधिकार श्रीमती अंजू शर्मा

❖◆❖